IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

पं. मालवीय जी व डॉ. अम्बेडकर के चिंतन में स्त्री शिक्षा

डॉ. अर्चना गुप्ता

सहायक प्राध्यापक

राजनीति विज्ञान विभाग

शासकीय महाविद्यालय बलरामपुर (छ0ग0)

सारांश

नारी की महत्ता को स्पष्ट करते हुए भगवान बुद्ध ने कहा था "नारी संसार की महानतम विभूति है। उसकी अपरिहार्य महत्ता है। उसके द्वारा ही बोधिसत्व तथा विश्व के अन्य शासक जन्म गहण करते हैं।" युगद्रष्टा महामना पण्डित मालवीय जी केवल एक महान शिक्षाविद ही नही थे, अपितु इसके साथ–साथ वे कुशल राजनीतिज्ञ, सांसद, समाजशास्त्री, अर्थशास्त्री, मानवतावादी, धर्म प्रवक्ता, श्रेष्ठ अधिवक्ता, हिन्दुत्व के श्रेष्ठ प्राधिकारी, हिन्दी भाषा के श्रेष्ठ उन्नायक, आदर्श प्राध्यापक, कुशल पत्रकार एवं भारतीय संस्कृति के प्रकाशस्तम्भभूत भारतीयता की जीवन्त प्रतिमूर्ति थे। मालवीय जी महाराज जैसा भिक्षुक एवं महादानी मिलना सर्वथा दुर्लभ है।

लोकतांत्रिक मूल्यों के पक्षधर और संविधान निर्माता के रूप में डॉ. अम्बेडकर का योगदान अविस्मरणीय है। अम्बेडकर महिलाओं के हितों व उनके अधिकारों के प्रति एक ऐसे संवेदनशील योद्धा एवं पुरोधा थे जिन्होंने स्त्री से जुड़े लगभग सभी क्षेत्रों को अपने चिंतन का हिस्सा बनाकर नारी मुक्ति का आह्वान किया।

प्रस्तुत प्रपत्र में महामना पण्डित मालवीय जी व डॉ. अम्बेडकर के त्याग– तपोमय व्यक्तित्व एवं कृतित्व के माध्यम से शिक्षा, विशेषकर स्त्री शिक्षा के क्षेत्र में उनके योगदान को जनसामान्य के समक्ष रखने का प्रयास किया गया है।

कुंजी शब्द– कन्दराओं, ब्रह्मचर्येण, परिधि, संविधान, पितृसतात्मक

पं. मालवीय जी के चिंतन में स्त्री शिक्षा

महामानव पण्डित मालवीय जी के जीवनदर्शन पर यदि दृष्टिपात करें, तो हमे यह पता चलता है कि वे इसलिए महामानव या महापुरुष नहीं थे कि उन्होंने सामाजिक क्रियाकलापों से उदासीन होकर हिमालय की कन्दराओं में वर्षो तक कठोर तपस्या करते हुए आत्मज्ञान के द्वारा मोक्षमार्ग का वरण किया, अपितु वे इसलिए एक महामानव एवं महामनस्वी के रूप में जाने जाते है; क्योंकि उन्होंने देश, काल, परिस्थिति के अनुसार, लोककल्याण की दृष्टि से जनसामान्य के कष्टों को दूर करने के लिए आजीवन स्वयं को कष्टों की ज्वाला में समर्पित कर दिया। इतना महान् त्याग–तपोमय संयत जीवन व्यतीत करने के बाद भी इस महाविभूति ने स्वयं को कर्तापन के अभिमान से सदैव दूर रखा।

महामना पण्डित मालवीय जी स्त्री–शिक्षा की ओर विशेष ध्यान देते थे। बलिकाओं की शिक्षा के सम्बन्ध में उनके दृष्टिकोण की परिधि बड़ी विस्तृत थी। केवल स्कूल और कॉलेजों के भीतर सीमित नहीं थी। लड़कियों के चरित्र निर्माण पर वे विशेष बल देते थे। जब कभी कोई भी लड़का या लड़की आटोग्राफ बुक पर मालवीय जी से हस्ताक्षर करने के लिए कहता; तो लड़कों की आटोग्राफ बुक पर–

सत्येन ब्रह्मचर्येण व्यायामेनाथविद्यया।

देशभक्त्यात्मत्यागेन सम्मानार्हः सदा भव।।

(सत्य से ब्रह्मचर्य से, व्यायाम से, विद्या से, देशभक्ति से, आत्मत्याग से सदा सम्मानित हो।)

तथा लड़कियों की आटोग्राफ बुक पर–

जो पै पुत्री होय तो, सीता सती समान।

अथवा सावित्री सरिस, रुप शील गुण खान।।

एसा लिखकर हस्ताक्षर करते थे। ये दोनों पद्य मालवीय जी के स्वरचित पद्य है। महामना जी चरित्रनिर्माण पर जितना जोर देते थे, यह सन् 1935 के महामना के अधोलिखित व्याख्यान से स्पष्ट है; जिसे उन्होंने गीता–प्रवचन के अवसर पर दिया था–

''इस विद्यालय में केवल विद्या ही नहीं पढ़ना है। इसी के साथ–साथ चरित्र भी बनाना है। ज्ञान और चरित्र दोनों का मेल कर देने से संसार में मान होगा तथा गौरव प्राप्त होगा।''

एक अन्य अवसर पर महामना ने कहा था–

''विश्वविद्यालय में निवास करने का पहला कर्त्तव्य यह है कि व्यायाम करके शरीर बनाएँ। पहले स्वास्थ्य सुधारे फिर विद्या पढ़े। स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन का सन्निवेश करे तो हम जीवन का लाभ उठा सकते हैं।

श्री वेंकटेश नारायण तिवारी ने उल्लेख किया है कि महामना ने एक स्थान पर स्वयमेव लिखा है– ''शास्त्र बतलाता है कि धर्मार्थ काममोक्षाणां आरोग्यं मूलकारणम्। अर्थात् धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के साधन का मूल कारण आरोग्य है। यही स्त्री–शिक्षा का पावन स्रोत है। स्रोत कलुषित होने से शिक्षा विकृत होकर हानि पहुँचाती है।''

मालवीय जी छात्राओं के शिक्षण और चरित्र संगठन का उत्तरदायित्व अध्यापको पर रखते थे और उन्हें बहुत ठोंक–बजाकर चुनते थे। थोड़े में यह कहना काफी होगा कि महामना जी एक धर्मनिष्ठ, सदा जागरूक शिक्षा शास्त्री थे। जो स्त्रियों और बालिकाओं का सर्वांगीण अभ्युदय चाहते थे और उसके लिए अथक परिश्रम तथा प्रयत्न करते थे।

महामना जी स्त्रियों को पुरुषों की अपेक्षा गौड़ स्थान नहीं देते थे। जो शिक्षा पुरुषों के लिए उपयोगी समझते थे, उन सबको वे स्त्रियों एवं बालिकाओं के लिए उचित समझते थे। वे चाहते थे कि लड़कियाँ और स्त्रियाँ सीता और अरुन्धती के समान पवित्र हो। वे चाहते थे कि आजकल की लड़कियों पर भी उनके पिता का वैसा ही गर्व हो, जैसा कि महर्षि जनक को था।

मालवीय जी कहा करते थे उनकी लड़कियाँ गार्गी और मैत्रेयी की तरह विदुषी हो। जो वाल्मीकि के आश्रम को छोड़कर अगस्त्य के विद्यालय में पढ़ने के लिए आगई थी; क्योंकि वाल्मीकि के आश्रम में लव और कुश के लालन–पालन में महर्षि के व्यस्त रहने से विद्याध्ययन में असुविधा होती थी।

मालवीय जी ऐसी ही ऊँची एवं पवित्र स्त्री–शिक्षा की कल्पना कर रहे थे। इसी उद्देश्य से उन्होंने प्रयाग में बालकृष्ण भट्ट और राजर्षि पुरुषोत्तम दास टण्डन के सहयोग स गौरी पाठशाला की (सन् 1904 में) स्थापना की, जो आजकल उच्चतर माध्यमिक कॉलेज के नाम से विख्यात है, तथा जहाँ पर 1800 बालिकाएँ विद्याध्ययन करती है।

जब काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना हुई तो महामना ने लड़कियों के लिए स्वतंत्र रूप से महिला महाविद्यालय की स्थापना की। जहाँ पर हर विषय में ऊँची से ऊँची शिक्षा के साथ–साथ छात्राओं को धर्म की भी शिक्षा दी जाती है। उनके निवास के लिए अन्दर ही छात्रावास भी है। मालवीय जी पर्दा–प्रथा नहीं चाहते थे; परन्तु उनका कहना था कि जब तक समाज के नरपशु, नर का रूप धारण न कर लें तब तक नारी को उनसे सदैव बचते रहना चाहिए। इसी उद्देश्य से उन्होंने विशाल परकोटे के अन्दर उनके विद्याध्ययन की व्यवस्था की।

14 दिसम्बर सन् 1929 को का0हि0वि0वि0 के बारहवें उपाधि–वितरण महोत्सव के अवसर पर दीक्षान्त–भाषण देते हुए पूज्य मालवीय जी ने कहा था "यह कहने की आवश्यकता नही है कि भारतवर्ष में प्रचलित वर्तमान शिक्षा प्रणाली, हमारी राष्ट्रीय तथा सांस्कृतिक आवश्यकताओं के लिए पूर्णतः अनुपयुक्त है। हम लोग अन्धविश्वास की तरह एक ऐसी प्रणाली का अनुसरण करते चले आ रहे है, जिसका निर्माण अन्य जातियों के लिए हुआ था और जिसका उन लोगों ने बहुत दिन हुए परित्याग कर दिया। हमारे यहाँ स्त्रियों की शिक्षा प्रणाली इसका एक ज्वलन्त उदाहरण है। हम लोग अपनी बालिकाओं को बिना यह सोचे कि उनकी शिक्षा से हमें किस प्रकार के फल की आवश्यकता है, वही विषय पढ़ने के लिए बाध्य करते हैं, जो नवयुवकों के लिए निर्धारित किए गये है।"

अपने दीक्षान्त भाषण में मालवीय जी ने यह भी कहा कि "पुरुषों की शिक्षा से स्त्रियों की शिक्षा का प्रश्न अधिक महत्वपूर्ण है। क्योंकि वे ही भारत की भावी सन्तानों की माता है। वे हमारे भावी राजनीतिज्ञों, विद्वानों, तत्वज्ञानियों, व्यापार तथा कला–कौशल के नेताओं की प्रथम शिक्षिका है। उनकी शिक्षा का प्रभाव भारत के भावी नागरिकों की शिक्षा पर विशेष रूप से पड़ेगा। महाभारत में कहा गया है कि, "माता के समान कोई शिक्षक नहीं है।" अतएव हमें चाहिए कि सर्वप्रथम हम उनकी शिक्षा का उद्देश्य निश्चित कर लें और इस विषय में सर्वसम्मति से यह निश्चय करें किस प्रकार की शिक्षा उनके योग्य होगी। किस प्रकार हम अपने प्राचीन साहित्य तथा संस्कृति के उत्तम ज्ञान के साथ–साथ वर्तमान साहित्य तथा विज्ञान की शिक्षा को उन तक पहुँचा सकते हैं। किस प्रकार हम उन्हें जीव–विज्ञान, चित्रकला, संगीत आदि की शिक्षा दे सकते हैं और देश की स्त्री जाति में किस प्रकार शारीरिक, मानसिक और नैतिक तथा आध्यात्मिक उत्थान ला सकते हैं। क्या आप चाहते है कि हमारे देश में सावित्री, अरुन्धती, मैत्रेयी, लीलावती और सुलभा आदि स्त्रियों के समान अथवा सुराज्य प्रबंधन करने वाली अहिल्याबाई एवं झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई के समान निर्भीक सैनिक पुनः पैदा करें? क्या आप ऐसी स्त्रियों को जन्म देना चाहते हैं जिनमें प्राचीन तथा नवीन सभ्यता के सभी सद्गुणों का सुन्दर संयोग हो, जो अपनी शिक्षा के द्वारा भावी भारत

के पुनर्निर्माण में आपका पूर्ण रूप से सहयोग कर सके। जब तक हमारे देश की स्त्रियों की शिक्षा के लिए एक राष्ट्रीय कार्यक्रम का निर्माण नहीं हो जाता, तब तक इसी प्रकार के अन्य प्रश्नों पर विचार प्रकट करने की आवश्यकता पड़ेगी। राजनीतिज्ञों तथा विद्वानों को ऐसी योजनाओं पर सम्मति तथा स्वीकृति देने के लिए एक ही साथ बैठकर विचार करना पड़ेगा।'' (14 दिसम्बर सन् 1929 का का0हि0वि0वि0 उपाधि वितरण दीक्षान्त भाषण)।

इस प्रकार मालवीय जी समाज की उन्नति के लिए स्त्रियों को शिक्षित करना अनिवार्य समझते थे। उनका विचार था कि, ''जातीय जीवन के पुनरूत्थान के लिए स्त्री शिक्षा के पवित्र कार्य को साहस के साथ किया जाए।'' महामना का विचार था कि ''पुरुषों की तरह स्त्रियों को भी देशहित का कार्य करना चाहिए। उन्हें याद रखना चाहिए कि ईश्वर का तत्व उनमें भी है और जब तक वे इस मार्ग में अग्रसर नहीं होगी; तब तक देश की उन्नति सम्भव नहीं है।''

अन्त में कर्नल वेजवुड द्वारा मालवीय जी के सम्बन्ध में कहे गए चन्द शब्दों से महामना के व्यक्तित्व के बारे में जाना जा सकता है– ''भारतीय शिक्षा पं0 मालवीय जी की कितनी ऋणी है, इससे यूरोप, परिचित है; किन्तु इसके पूर्व ऐसी विशाल संस्था मैंने नहीं देखी, जो बहुत कुछ एक ही व्यक्ति की कृति हो। यदि पं0 मालवीय कभी राजनीतिज्ञ नहीं होते, तो वे शिक्षा जगत के सर्वोच्च नेता माने जाते, और यदि हिन्दू विश्वविद्यालय उनका बच्चा न होता तो वे संसार के बहुत बड़े राजनीतिज्ञ माने जाते। भारत तथा पाश्चात्य देशों में यह मिलन अनोखा है।''

डॉ. अम्बेडकर के चिंतन में स्त्री शिक्षा

डॉ. अम्बेडकर का विचार था कि महिलाओं में शिक्षा का प्रसार कर, उन्हें आत्म–निर्भर बना तथा उनमें निर्णय लेने की क्षमता का विकास करके ही महिला सशक्तिकरण किया जा सकता है।

डॉ. अम्बेडकर ने एक सभा को संबोधित करते हुए कहा था –''जिस प्रकार पुरूषों को शिक्षा की आवश्यकता होती है वैसे ही महिलाओं को भी होती है। यदि उन्हें पढ़ना–लिखना आ गया तो तुम्हारी बहुत उन्नति होगी। जैसे तुम वैसे तुम्हारी संतान भी होगी।'' डॉ. अम्बेडकर इस तथ्य पर जार देते थे कि संतान सबसे पहले अपनी मां के ही सम्पर्क में आती है और यदि महिला शिक्षित हो गयी तो परिवार के सभी सदस्य अपने आप शिक्षित हो जायेंगे। अर्थात महिला का शिक्षित होना बेहद जरूरी है, जिससे न केवल वह स्वयं शिक्षित होगी अपितु परिवारों को भी शिक्षित कर सामाजिक परिवर्तन में तेजी आ सकेगी। डॉ. अम्बेडकर के गुरू जोतीबा फुले ने भी इसीलिए महिला शिक्षा पर जोर दिया और उसके लिए अपनी पत्नी को ही सबसे पहले शिक्षित कर शिक्षक बनाने के लिए चुना। जोतीबा फुले के अनुसार ''जब मेरी पत्नी शिक्षित हो सकती है तो और महिलाएं क्यों नहीं शिक्षित हो सकती? ..... मेरी पत्नी भी उन सभी परम्पराओं व रूढ़िवादियों में गुजर रही है।''

अपने एक अभिभाषण में महिला शिक्षा के महत्व को प्रतिपादित करते हुए डॉ. अम्बेडकर ने कहा था ''किसी भी व्यक्ति को उन्नति के लिए शिक्षा की परम आवश्यकता होती है, चाहे वह महिला हो या पुरूष, बिना शिक्षा के सर्वत्र अंधेरा है। प्रकाश फैलाने के लिए शिक्षा परमावश्यक है। यदि हम लड़कों के साथ–साथ लड़कियों की शिक्षा की ओर भी ध्यान देने लग जाएं तो हम और भी शीघ्र प्रगति कर सकते हैं। शिक्षा किसी वर्ग की बपौती नहीं है। उस पर किसी एक वर्ग का अधिकार नहीं है। समाज के प्रत्येक वर्ग को शिक्षा का समान अधिकार है।

डॉ. अम्बेडकर के अनुसार शिक्षा हमें अच्छे, बुरे का ज्ञान कराती है व समाज की मुख्य धारा से जोड़ने का कार्य करती है, तथा अन्याय के विरूद्ध आवाज उठाने के लिए प्रेरित करती है। डॉ. अम्बेडकर का अतः मानना था कि शिक्षा ही एक ऐसा अस्त्र है जो हमें सभी प्रकार के अन्यायों से मुक्त करा सकता है। शिक्षा मनुष्य को पशुओं से भिन्न करती है तथा जीने का तरीका सिखाती है। डॉ. अम्बेडकर ने समाज में परिवर्तन लाने हेतु महिला शिक्षा की अहम भूमिका को स्वीकारते हुए कहा था कि महिला शिक्षा पुरूष शिक्षा से भी अधिक आवश्यक है। यह राष्ट्र के भावी निर्माताओं का निर्माण करने की महती भूमिका निभाती है। किसी भी समाज की उन्नति को महिला उन्नति का मापदंड मानने वाले डॉ. अम्बेडकर ने बम्बई की एक सभा में महिलाओं को संबोधित करते हुए कहा था ''महिला राष्ट्र की निर्मात्री है। राष्ट्र का हर नागरिक उसकी गोद में पलकर बढ़ता है। महिला को जागृत किए बिना राष्ट्र का विकास असंभव है।'' डॉ. अम्बेडकर ने शिक्षा द्वारा बालक के सही लालन पालन पर जोर देते हुए कहा था कि बच्चे के सही लालन पालन हेतु मां का शिक्षित होना आवश्यक है। बच्चों के व्यक्तित्व एवं चारित्रिक निर्माण में पुरूष की अपेक्षा महिला का ही अधिक योगदान रहता है। वह देश के भावी नागरिक की निर्मात्री होती है। वह जिस प्रकार के संस्कार बच्चों में डालेगी, बच्चा उसी क अनुरूप ढलता चला जायेगा। इस प्रकार डॉ. अम्बेडकर ने नारी को विकास रूपी रथ का दूसरा पहिया करार देते हुए राष्ट्र की उन्नति में उनकी सहभागिता का समर्थन किया।

अम्बेडकर को आभास था कि शिक्षा ही यह ताकत है जो सभी बेड़ियों को काट सकती है। किसी भी देश अथवा समुदाय की वास्तविक प्रगति के लिए यह आवश्यक है कि उनके सभी नागरिक शिक्षित हो। नारी मुक्ति के वाहक डॉ. अम्बेडकर ने स्वतंत्रता, समानता तथा स्वाभिमान से जीवन जीने की शिक्षा देते हुए दो मूल मंत्र दिए – प्रथम, शिक्षित बनो, संगठित रहो और संघर्ष करो तथा द्वितीय 'अप दीपो भव' अर्थात् अपना दीपक स्वयं बनो। उन्होंने प्रश्न उठाया कि ज्ञान और विद्या पर केवल पुरूषों का एकाधिकार क्यों? जबकि 'घर में एक पुरूष पढ़ता है तो केवल वही पढ़ता है और यदि घर में स्त्री पढ़ती है तो पूरा परिवार पढ़ता है।

अगस्त 1913 में न्यूयार्क में अध्ययन के दौरान अम्बेडकर ने कहा था ''हमें कर्म सिद्धांत त्याग देना चाहिए। यह गलत है कि मां–बाप बच्चों को जन्म देते हैं, कर्म नहीं देते। मां–बाप बच्चों के जीवन को उचित मोड़ दे सकते हैं, यह बात अपने मन पर अंकित कर यदि हम लोग अपने लड़कों के साथ–साथ लड़कियां को भी शिक्षित करें। हमारे समाज की उन्नति तीव्र होगी।'' शिक्षित होकर ही महिलाएं अपने अधिकारों के प्रति सशक्त होगी। उनका मानना था कि शिक्षा ब्राहमणवादी पितृसतात्मक व्यवस्था से मुक्ति प्राप्त करने का अहम साधन है।

शिक्षा की नींव को सशक्त करने हेतु अम्बेडकर जाति, लिंग तथा धर्म सभी प्रकार के भेदभाव को नकारते हुए 6–14 वर्ष तक के सभी बच्चों को समान, अनिवार्य एवं निःशुल्क आरंभिक शिक्षा को संविधान के भाग–तीन में वर्णित मौलिक अधिकारों का हिस्सा बनाना चाहते थे, किन्तु तत्कालीन समय में पर्याप्त समर्थन के अभाव में उनका यह प्रयास अधूरा सिद्ध हुआ। 2002 में 86वें संवैधानिक संशोधन विधेयक के माध्यम से भारतीय सरकार ने अनुच्छेद 21 (क) के तहत् 6 से 14 वर्ष के बच्चों के लिए अनिवार्य एवं निःशुल्क शिक्षा का प्रावधान कर मौलिक अधिकार के रूप में मान्यता प्रदान कर उनके सपने साकार किया। मौलिक कर्तव्यों से जोड़कर इसे माता–पिता या संरक्षक का दायित्व करार दिया।

इस प्रकार नारी शिक्षा के उत्थान के लिए जो प्रयास डॉ. अम्बेडकर व पं. मालवीय जी ने किया वह अविस्मरणीय है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. डॉ0 तिवारी, उमेश दत्त, ''महामना के लेख'', महामना मालवीय फाउण्डेशन, वाराणसी, 2004
2. डॉ0 तिवारी, उमेशदत्त, ''महामना के भाषण'', महामना मालवीय फाउण्डेशन, वाराणसी, 2004
3. डॉ0 पाण्डेय, मिथिलेश, ''मदन मोहन मालवीय जीवन दर्शन'', राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 2007
4. तिवारी, वेंकटेश नारायण, ''महामना पं0 मदन मोहन मालवीय की जीवनी'', बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय प्रेस, वाराणसी, 1962
5. डा0 तिवारी उमेशदत्त, ''भारत–भूषण : महामना पं0 मदन मोहन मालवीय'' (जीवन एवं व्यक्तित्व) रत्ना प्रिंटिंग वर्क्स, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, 1988
6. गुप्ता, मनोज कुमार, ''विशेष लेख/डॉ. अम्बेडकर का नारीवादी चिंतन'', सामाजिक न्याय संदेश पत्रिका, डॉ. अम्बेडकर प्रतिष्ठान, नई दिल्ली, वर्ष : 14, अंक 8, अगस्त 2016

7- IGNOU, MHI-03, Unit - 08

8. कुसुम, मेघवाल, ''भारतीय नारी के उद्धारक डॉ. बी. आर. अम्बेडकर'', सम्यक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2005
9. प्रो. बौड़ई, हिमांशु, ''डॉ. अम्बेडकर के चिंतन में दलित विमर्श : भारतीय महिलाओं के विशेष संदर्भ में'' शोध पत्रिका – रिव्यू ऑफ रिसर्च ,Val-8, Issue-7, Aprit-2019
10. शेखर, सुधांशु, ''सामाजिक न्याय अम्बेडकर – विचार और आधुनिक संदर्भ, दर्शना पब्लिकेशन, बिहार, 2014
11. सीमा, ''डॉ. अम्बेडकर और नारी सशक्तिकरण'' शोध रिसर्च रिव्यु जनरलस्, Val-04, Issue-03, March 2019